(Hindi)

1520
[illegible]

Acc No. 539

Hindi

119 P

Microfilm

RECEIVED
23 MAY 1931
DEPARTMENT

महात्मा गांधी का रिसाला ॥

प्रकाशक।- पण्डित बाबू राम दौनेरियाँ पोस्ट जैत पुर कलां
ज़िला आगरा
के. एम. प्रेस देहली

ARCHIVES LIBRARY
539
Date 13.4.35 (?)
GOVT. OF INDIA

चरखा चला के गांधी भगवान बनगया॥
तब से है गांधी का यह स्थान बस गया।
हिन्दुस्तान एक गुलिस्ताम बन गया॥
था कृष्ण जी का चक्र सुदर्शन जो रिपुदमन।
चरखा चला के गांधी भगवान बन गया॥
इन की नसीहतों पे अमल जिस ने कुछ किया।
हैवान से फ़रिश्ता यह इन्सान बन गया॥
आया था जो गुलामों को आज़ाद करने को।
वह गांधी भी जेल का महमान बन गया॥
नाला जो निकला दिल से वतन के मलाल में।
अर्जुन का तीर राम का वह बान बन गया॥
जबर से सच्ची लक्ष्मी पूजा जो दी चला।
हर एक घर है राम का स्थान बन गया॥
मन्दिर बनी स्वराज्य का है शौक़ अब तो जेल।
मुश्किल जो काम था हमें आसान बनगया॥

राष्ट्रिय देवियां

झण्डा आज़ादी का निकली हैं यह लेकर देवियां।
मर्द बुज़दिल बन गये और जेरमेनर ...
ऐ जवां मर्दों तुम्हें कुछ शर्म आनी चाहिए।
जेल जाने के लिये उठी हैं चकलर देवियां॥
रानी लक्ष्मी ... और दुर्गावती की इन में है।
हैं चली सत्याग्रह करने जो उठ कर देवियां॥

तोप और बन्दूक़ से यह अब ज़रा डरती नहीं।
क्या डरेंगी फिर पुलिस के रूल से हंटर देवियां॥
सत्यवती जी और मिसेज़ मित्रा हैं फ़ख्रे मुल्क हिंद।
क़ाबिले ताज़ीम हों दोनों ने क्यों कर देवियां॥
जोश देख शक्ती उनकी आत्मा में है ज़रूर।
लौटेंगी जेलों से यह स्वराज्य लेकर देवियां॥

लेखक पण्डित गोविन्द प्रसाद मिश्र

साइमन साहब ने लिखा है हिन्द की तक़दीर में।
तौक़ गर्दन में रहे और पैर हों जंजीर में॥
कौन मानेगा भला कहना तुम्हारा री जनाब।
रास्ती की बू नहीं है आप की तहरीर में॥
लद गये दिन रोब के जाता रहा कुल रातबार।
खौफ़ की बू तक नहीं बाकी रही नाज़ीर में॥
मौत का भी प्यार करना सीखते आते हैं हम।
इस क़दर उलटा असर है आप की तदबीर में॥
कह रही है आस्मां से लाजपत की रूहे पाक।
अब नहीं बंधने का सेवा इण्डियन नख़चीर में॥
आप की अदा रंगिया बस देखने ही भर की है।
जिस तरह नाजो अदा की शान हो तस्वीर में॥
शाने शाही की नहीं दुनिया में गुंजाइश रही।
कह रहे हैं रूसी इसकी ज़ार की तक़दीर में॥
देखता है ख्वाबे शाही अबभी इंगलिस्तान अगर।

हम भी कह सकते हैं कुछ इस ख्वाब की तावीर में॥
जलने ही वाला है उठता है धुवां ज़ालिम के घर॥
है यक़ीं कामिल मुझे इस गांधी की तासीर में॥

शहीदों के खूं का असर

शहीदों के खूं का असर देख लेना।
मिटायेंगे ज़ालिम का घर देख लेना॥
किसी के इशारे के हम मुन्तज़िर हैं।
बहा देंगे खूं की नहर देख लेना॥
झुका देंगे गरदन को हम ज़ेर खंजर।
खुशी से कटायेंगे सर देख लेना॥
जो खुद ग़र्ज़ गोली चलाते हैं हम पर।
तो क़दमों में उन का ही सर देख लेना॥
जो नक़्शा हम ने खींचा है खूने जिगर से।
वह होगा कभी बार वर देख लेना॥
किनारे पे आये भंवर से वह किश्ती।
वह आयेगी एक दिन लहर देख लेना॥
बलायें ये जायेंगी खुद सर निगूं हो।
नहीं होगा इन का गुज़र देख लेना॥
खुदा ही हुआ हिंद आज़ाद अपना।
छपेगी यह एक दिन खबर देख लेना॥

फांसी के तख्ते पर देशभक्तों के मनोभाव।

कहते हैं अलविदा अब हम इस जहान को।
जाकर खुदा के घर फिर आया न जायगा॥
अहलेवतन अगर वे हमें भूल जायेंगे।
अहले वतन को हम से भुलाया न जायगा॥
जुल्मो सितम से तंग न आयेंगे हम कभी।
हम से सरे नियाज़ झुकाया न जायगा॥
इस से ज्यादा और सितम क्या करेंगे वह।
इस से ज्यादा उन से सताया न जायगा॥
हम जिन्दगी से रूठ कर बैठे हैं जेल में।
अब जिन्दगी से हम को मनाया न जायगा॥
यह सच है मौत हम को मिटा देगी दुहेर से।
लेकिन हमारा नाम मिटाया न जायगा॥
हम ने ल ई आग है जो इन्कलाब की।
इस आग को किसी से बुझाया न जायगा॥
यारो है अब भी वक्त. हमें देख भाल लो।
फिर कुछ पता हमारा लगाया न जायगा॥
आज़ाद हम कर सके अपने मुल्क को।
क्योंकर यह मुंह खुदा को दिखाया न जायगा॥

रसिया

प्रीतम चलूं तुम्हारे संग । जंग में पकडूंगी तलवार ॥
गाढ़े के सब वस्त्र बनाओ । सारी पब्लिक को पहनाओ ॥
और मैं करूं सूत तैय्यार । जंग में ॥
ऊंच नीच सब को बतलाओ । गांधी का पैगाम सुनाओ ॥
मैं भी करूं नमक तैय्यार । जंग में ॥
जेल तोप से नहीं डरूंगी । बिना काल के नहीं मरूंगी ॥
गोली खाने को तैय्यार । जंग में ॥
भारत को आज़ाद करूंगी । दुश्मन को बर्बाद करूंगी ॥
कुछ मत सोच करो भरतार । जंग में ॥
असहयोग की फ़ौज सजाओ । कांग्रेस की तोप लगाओ ॥
दुश्मन भगे समन्दर पार । जंग में ॥
गांधी जी बन रहे कलन्दर । आओ फंद में पड़ गये बान्दर ॥
देखो क्या करे करतार । जंग में ॥
अब गांधी ने कदम बढ़ाया । सब का दिल दहलाया ॥
देवी हो रही है तैय्यार । जंग में ॥
आज़ादी की छिड़ी जंग अब । बनो सरोजनी सत्यवती सब ॥
बहनो हो जाओ हुशियार । जंग में ॥
यह रसिया गा २ के सुनावे । जोश जवानों को भी आवे ॥
हो लाखों भी तैय्यार । जंग में ॥

७

शराब का बाईकाट

ख़ाना ख़राब कर दिया बिलकुल शराब ने।
जो कुछ कि न देखा था दिखाया शराब ने॥
बुलबुल की तरह बाग़ में लेते थे बुये गुल।
सन्डास नालियों में गिराया शराब ने॥
हम पीने वाले शर्बतें सन्दल थे दोस्तो।
कुत्तों का मूत हम को पिलाया शराब ने॥
मैदाने जंग में थे कभी हम भी सहस बाहू।
कीचड की नालियों में गिराया शराब ने॥
पी कर के दूध घी रहते थे हम आज़ाद।
जब से पी शराब हम खो चुके स्वराज्य॥

मेरे प्यारो हमें अब ले चलो तुम जेलखाने को।
तड़पते मुद्दतों से हैं वहां कम्मल बिछाने को॥
पन्हादो हथकड़ी बेड़ी ज़रा जंजीर भी कस दो।
मगर मुंह भर खुला रखना स्वदेशी गीत गाने को॥
मूंज बटकर बनादेंगे वहीं चक्की चला देंगे।
सभी तैय्यार बैठे हैं वहां कोल्हू घुमाने को॥
फड़कते हाथ रहते हैं सभी के आज भारत में।
बगीचों भीर हैं [illegible] चलाने को॥

नहीं भरता है अब सग पूरी वो मिठाई से।
ललचते हैं तुम्हारे अधभुने दाने चबाने को॥

कैसी तोप वतर्ज देवरया की

कैसी तोप चलाई रे अहो मेरे महात्मा गांधी॥
महात्मा गांधी मेरे महात्मा गांधी।
चर्खे की तोप है सूत का गोला सबको दिया दिखाई रे अहो म०
मैन चैस्टर लंकाशायर की मीलें न चलने पाई रे अहो म०
रोवें बिलायती नर और नारी खोदी हमारी कमाई रे अहो म०
सौंच करें हैं उन के ब्योपारी कैसी गदिश छाई रे अहो म०
बिकरी करने न देते लीडर खर्च लगे हैं एक दहाई रे अहो म०
किराये की कुछ पूछो मतना महीने में एक सौ भराई रे अहो म०
करैं कहन भैयो गांधी का चर्खका चक्र घुमाई रे अहो०
तज दो माल बिदेशी मंगाना फिर आज़ादी आई रे। अहो०
एक आने की पुस्तक देता मोहरचन्द्र कहे गाई रे। अहो०

वीरों का पैग़ाम

देश की खातिर खुशी से हम स्वाह होजायेंगे।
वह दाग मात्र भूमि का हम जीते जी धो जायेंगे॥
पर वाह नहीं तीरो तबर बन्दूक गोली तोप की।
गर धर्म के मैदान में हम गोली खासो जायेंगे॥
स्वतन्त्र देवी की निशानी जेल है हमें खेल घर।

हाथों की शोभा हथकड़ी हम पहन कर शो जायेंगे ॥
सौभाग्य का वह रोज जिस दिन होवेंगे कुरवान हम।
एक बार तो दुश्मन भी लाशें देख कर रो जावेंगें ॥
अब डट गये मैदान में झंडा स्वतन्त्र गाड़ के।
या तो हो गये पार वरना मरके खतम होजायेंगे ॥

महात्मा गांधी जी की ११ शर्तें ॥

महात्मा गांधी की ग्यारा शर्तें ! अमलमें लाकर दिखाना होगा।
प्रजा के आगे तुम्हे सितमगर । सर अपना अबतो झुकाना होगा॥
१. नशीली चीज़ें, शराब, गांजा, अफ़ीम आदिक जो बुद्धि हरतीं।
मिटा के इन की खरीद विकरी । दुकानें सारी उठाना होगा॥
२. हमारे सिक्के की दर को साहब। घटा बढा कर के लूटते हो।
अब एक शिलिंग चार पेनी ही। भाव उस का बनाना होगा ॥
३. लगान आधा करो ज़मीं का । किसान जिस से ज़रा सुखी हों।
महकमा इसका हमारी कौंसिल के तावे तुम को रखाना होगा॥
४. फ़जूल खर्ची बिला ज़रूरत । जो फौज पर हो रही हमारी।
अधिक नहीं तो आधा उसको ! ज़रूर साहब ! घटाना होगा॥
५. बड़े - बड़े - भारी - भारी वेतन । डकारते हैं जो आला अफ़सर।
उसे मुआफ़िक़ लगान आधा या उस से भी कम कराना होगा॥
६. स्वदेशी कपड़े करें तरक्की । विदेशी कपड़े न आने पावें।
विदेशी कपड़े पे और महसूल । ज्यादा तुमको लगाना होगा॥

७ समुद्र-तट का कराची वारीगज । न हाथ में हो विदेशियों के
उसे हमारे महाजनों के । अधीन होकर चलाना होगा॥
८ जिन्हें कतल, या कतल इरादा । सज़ा मिली हो उन्हें न छोड़ें
बकाया क़ैदी पुलिटिकल सब । तुरन्त साहब छुड़ाना होगा
९ उठा लिये जायें राजनैतिक जो मामले चल रहे मुलक में ।
जो एकसौ चौबीस दफ़ा अलिफ़ है उसे तो बिलकुल मिटाना होगा॥
अठारह का एक रेगुलेशन, तथा दफ़ा रौसी सब उठाकर ।
जिला वतन सब हमारे भाई । वतन में साहब बुलाना होगा ॥
१० महकमा खुफ़िया पुलिस उठादो या करदो उस को प्रजा के ताबे
११ हमें भी बन्दूक और पिस्तौल । बराए हिफ़ाज़त दिलाना होगा॥
हमें सबर होगा बस उसी दम । जब होंगी पूरी यह ग्यारा शर्तें ।
सहे हैं ज़ुल्मो सितम हज़ारों । न ज्यादा हम को रुलाना होगा॥

राष्ट्रीय झण्डा

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा।
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥ टेक

सदा शक्ती सरसाने वाला । प्रेम सुधा बरसाने वाला ।
वीरों को हर्षाने वाला मातृ-भूमि का तन मन सारा॥ झं०
स्वतन्त्रता के भीषण रण में लख कर बढ़े जोश क्षण क्षण में ।
कांपे शत्रु देखकर रण में । मिट जाये भय संकट सारा॥ झं०
इस झण्डे के नीचे निर्भय। लें स्वराज्य हम अविचल निश्चय
बोलो भारत माता की जय। स्वतंत्रता हो ध्येय हमारा॥ झं०

आओ प्यारे वीरो आओ। देश धर्म पर बलि बलि जाओ।
एक साथ सब मिल कर गाओ। प्यारा भारत देश हमारा॥ अं०
इस की शान न जाने पाये। चाहे जान भले ही जाये।
विश्व विजय करके दिखलाये। तब होवे प्रण पूर्ण हमारा॥

नौजवान की तमन्ना

मुर्दा भारत को जिला जायेंगे मरते मरते।
नाम ज़िन्दों में लिखा जायेंगे मरते मरते॥
हमको कमज़ोर समझ बैठे हमारे दुशमन।
उन का अभिमान मिटा जायेंगे मरते मरते॥
जुल्म करती है हिन्द पर नौकर शाही।
उस की बद चाल मिटा जायेंगे मरते मरते॥
दिलों पर दुशमनों के अपनी जवां मर्दी से।
हिन्द का सिक्का बिठा जायेंगे मरते मरते॥
जैल खाने की भी खुश होके बढ़ायेंगे रौनक़।
एक क्या लाखों बना जायेंगे मरते मरते॥
मातृ-भूमि के लिये जान निछावर कर दें।
सब भारत को पढ़ा जायेंगे मरते मरते॥
हैं तो नाचीज़ मगर इतनी जुरत रखते हैं।
हिन्द की बन्दी छुड़ा जायेंगे मरते मरते॥
दत्त, भगत, दयानन्द तिलक, गांधी का।
सब को फ़रमान सुना जायेंगे मरते मरते

सरकार की जान के लाले हैं

ऐ मादरे हिन्द न हो गमगीन् दिनअच्छे आने वाले हैं।
आज़ादी का पैगाम तुझे हम जल्द सुनाने वाले हैं॥
मा तुझको जिन जल्लादों ने दी है तकलीफ़ ज़ईफ़ी में।
मायूस न हो मग़रूरों को अब मज़ा चखाने वाले है॥
कमज़ोर हैं हम और बेबस हैं गो कुंजे क़फ़स में बैठे हैं।
बेकस हैं लाख मगर माता। हम आफ़त के पर काले हैं॥
मेरी रूह को करना क़ैदो क़तल इमकान से तेरे बाहर है।
आज़ाद है अपना दिल शैदा गो लाख ज़बां पर ताले हैं॥
मुस्लिम और हिन्दू मिल कर के एक हम क्या कर सकते हैं।
ऐ चर्खे कुहन हुशियार हो तू पुर सोज़ हमारे नाले हैं॥
गांधी ने तर्के तअल्लुक का कुछ ऐसा मंत्र चलाया है।
लरज़ा है जिस से अर्जोसमां सरकार की जान के लाले हैं॥
हां आए मुसाफ़िर बड़े-बड़े मग़रूर बिलआख़िर चले गए।
अब चंद रोज़ में परदेशी लंदन को जाने वाले हैं॥

ग़ज़ल चर्खा

स्वराज्य तो हमको दिलायेगा चर्खा।
विदेशी हकूमत मिटायेगा चर्खा॥

यह घूं घूं की ध्रुपद सुनायेगा चर्ख़ा।
मेरे हौसले अब बढ़ायेगा चर्ख़ा॥
अगर हिन्द अपना चलायेगा चर्ख़ा।
तो दुशमन का चरबी बनायेगा चर्ख़ा॥
अगर कोई दिल से भुलायेगा चर्खा।
तो नीचा उसी को दिखायेगा चर्खा॥
विदेशी को यहां से भगायेगा चर्खा।
स्वदेशी का डंका बजायेगा चर्खा॥
सदा मेल के गीत गायेगा चर्खा।
उदू के जिगर को जलायेगा चर्खा॥
नहूसत से पीछा छुड़ायेगा चर्खा।
हमें चैन से अब बिठायेगा चर्खा॥
हमें खीर हलवा खिलायगा चर्खा॥
हमें दूध शीरीं पिलायगा चर्खा॥
विदेशी तिजारत को खायेगा चर्खा।
स्वदेशी की जड़ को जमायेगा चर्खा॥
जो मुसा भी अपना घुमायेगा चर्खा।
तो दुशमन को चक्कर में लायेगा चर्खा॥

१४

गुलामी से हमको छुड़ायेगा खद्दर

ज़ालिम को जड़से मिटायेगा खद्दर।

अदायें जब अपनी दिखायेगा खद्दर।
हसीनों के दिल को लुभायेगा खद्दर॥
डीमन का लट्ठा नहीं नैनसुख है।
मलमल के पुरज़े सड़ायेगा खद्दर॥
फ़लालैन रोयेगी सर को पकड़ कर।
वकीलों के घर में जब आयेगा खद्दर॥
योरुप के रोयेंगे सारे जुलाहे।
घर घर में स्यापा करायेगा खद्दर॥
चिकन डोरिया और डब्बी की मलमल।
मलमल के सब को रुलायेगा खद्दर॥
भारत की इज़्ज़त है इस में ही भानू।
भारत के तन पर हो भारत का खद्दर॥
हमें यह भरोसा हमें यह यक़ीं है।
कि आज़ादी हम को दिलायेगा खद्दर॥
उरूज एक दिन ऐसा पायेगा खद्दर।
योरुप को नीचा दिखायेगा खद्दर॥
निगाहों में ऐसा समायेगा खद्दर।
हरसू नज़र हम को आयेगा खद्दर॥
हमें आग ऐसे लगायेगा खद्दर।

ज़मीं से फ़लक पर बिठायेगा खद्दर॥
हमें दोनों हाथों से जो लूटते थे।
अब उन के छक्के छुड़ायेगा खद्दर॥
जलाये हैं जिस तौर कपड़े विदेशी।
यूंहीं दिल उदू के जलायेगा खद्दर॥
हिक़ारत से देखो न हरगिज़ इसे तुम।
नहीं तो अभी होश उड़ायेगा खद्दर॥
न तहरीक खद्दर कम होगी यारो।
दिन बदिन बढ़ता यह जायगा खद्दर॥
जो खद्दर पहनने से डरते हैं उन को।
बला बन कर उन को न खायगा खद्दर॥
नहीं लेंगे तंजेब हम मुफ़्त भी अब।
खरीदेंगे जिस भाव आयेगा खद्दर॥
हिन्दू-मुसल्मां सभी समझे बैठे हैं।
गुलामी से हम को छुड़ायेगा खद्दर॥
जो पहनेगा खद्दर फ़लक उसके दिल में।
वतन की मुहब्बत बढ़ायेगा खद्दर॥

मांगिये अब खैर साहब कोट की पतलून की

चल नहीं सकती यहां पर अब तुम्हारी छून की।
मांगिये अब खैर साहब कोट की पतलून की॥

देखते रहना पड़े कम ख्वाब के बस ख्वाब आप।
हो मुयस्सर एक भी लच्छी न तुम को ऊन की॥
केक, बिस्कुट और डबल रोटी उड़ालो कूद कूद।
फ़िक्र बच्चों को पड़ेगी एक चुटकी चून की॥
फिर न मंसूरी व शिमले की मिले आबो हवा।
जंगलों में गर्मियां तुम को सतायें जून की॥
दिल हिला देने वाला मंज़र था वह जलियां बाग़ का।
ज़ालिमों तुमने बहाईं नदियां वां खून की॥
मिल गये मुस्लिम मज़े से आर्य, हिन्दू, जैन, सिख।
बनगई सैफ़ देखलो गूना गून की॥
मक्र से जब्र से कुल ले गये वह मालो ज़र।
खत्तियां खाली हुईं सब हिन्द के कारून की॥
फ़िक्र है तुम को टकों की बेचते इंसाफ़ को।
है दुकांदारी का ज़रिया हर दफ़ा कानून की॥
बे तकल्लुफ़, साफ़ गो। बेलौस कहता खूब तू।
हासिदों के दिल पे शम्सी धाक है मज़मून की॥

ब्योपारियों को विशेष लाभ

क्रांत कारी पुस्तकें १६ प्रकार की ३) में भेजी जाती हैं परन्तु ब्योपारियों को २०) हज़ार रक्खा है हर एक ब्योपारी को चाहिए कि मंगाकर लाभ उठायें॥

मिलने का पता:-

सोल एजेंट:- भारत बुक एजेंसी नई सड़क देहली॥